पाठ 9

साहस के पैर

– श्री जयशंकर अवस्थी

हमारी शारीरिक संरचना व रंग आदि प्रकृति की अनुपम देन है, हर शारीरिक बनावट की अपनी पहचान है, अपनी खासियत है। हमारी शारीरिक बनावट हमारे भावों की अभिव्यक्ति और सृजनात्मक क्षमता में आड़े नहीं आतीं, बल्कि हमें अपने कार्यों के प्रति और अधिक उत्साही बनाती हैं। इस पाठ का प्रतिनिधि चरित्र 'अचल' असावधानी के चलते रेल दुर्घटना का शिकार हो जाता है पर अपनी प्रतिबद्ध पहल से वह कक्षा को एक नई दृष्टि, एक नया सबक देने में सफल होता है।

घंटी अभी नहीं बजी थी। कक्षा में चिल्ल–पों मची थी। लेकिन जैसे ही अचल ने प्रवेश किया, एक सन्नाटा–सा खिंच गया।

वह आगे बढ़ा। तभी एक मोटा, नाटे कद का लड़का उठा और लपककर ब्लैकबोर्ड के सामने जा खड़ा हुआ। होंठो पर मुस्कान लिए उसने कहना शुरू किया, ''दोस्तो, भूगोल के मास्टर जी आते हैं तो अपने साथ नक्शा लाते हैं। नक्शे से हमें पता चलता है कि भारत कैसा है, दुनिया कैसी है। मगर इतिहास के मास्टर जी बेचारे क्या करें? अब इस साल हमारे कोर्स में तैमूर लंग वाला अध्याय है। मुझे चिंता थी कि आखिर हम कैसे जानेंगे कि तैमूर लंग कैसा था, कैसे उठता–बैठता था, कैसे चलता था। लेकिन भगवान की दया से––––––'' और कक्षा ठहाकों, तालियों और सीटियों से गूँजने लगी।

अचल को लगा किसी ने उसके दिल को मुट्ठी में दबोचकर मसल दिया है। वह जहाँ था, वहीं खड़ा रह गया। कक्षा में शोरगुल मचा था। एक आवाज़ आई, ''अपना भाषण तो तुमने अधूरा ही छोड़ दिया, बॉस।''

लेकिन तभी घंटी बज गई और मास्टर जी आ गए। शोरगुल थम गया। सब अपनी–अपनी जगह पर जा बैठे।

मास्टर जी ने हाजरी ली। फिर उन्होंने पुकारा, ''अचल श्रीवास्तव!''

अचल चौंका; उसने खड़े होने के लिए बैसाखियाँ संभालीं। मास्टर जी कुर्सी से उठते हुए बोले, ''बैठो बेटे, बैठे रहो। यह सब कैसे हो गया? तुम्हारा पैर.....'' पास आकर उन्होंने पूछा।

अचल बैसाखियों के सहारे खड़ा हो गया था। उसने जवाब देने की कोशिश की लेकिन गले में जैसे कुछ अटक गया। आँखें भर आईं।

''ओह.....खैर, छोड़ो बेटे इस बात को।'' मास्टर जी द्रवित हो उठे। उन्होंने अचल की पीठ थपथपाई और वापस अपनी जगह पर आकर बोले– ''देखो, तुम लोगों का यह नया दोस्त कितने बड़े दुर्भाग्य का शिकार हुआ है। अच्छा हो कि तुम लोग इसके साथ सहानुभूति रखो।''

लेकिन मास्टर जी के इस उपदेश का कोई असर नहीं हुआ था। पीरियड खत्म होने पर ज्यों ही मास्टर जी कक्षा से निकले, धमाचौकड़ी फिर शुरू हो गई। नाटे कद का वह मोटा–सा लड़का फिर उठकर भाषण देने के अंदाज में ब्लैकबोर्ड के पास जा खड़ा हुआ था।

घंटाघर में बारह बज गए। पिता जी के खर्राटे गूँज रहे थे। माँ भी सो चुकी थीं, लेकिन अचल की आँखों में नींद नहीं थी। तभी उसका मन साल भर पहले की एक घटना में उलझ गया।

पिता जी का तबादला हो गया था। कितना खुश था अचल उस दिन। रास्ते में एक बड़े स्टेशन पर गाड़ी रुकी थी। अचल पानी लेने उतरा था। नल पर काफी भीड़ थी। जब अचल का नंबर आया तो गाड़ी ने सीटी दे दी। पिता जी घबराकर चिल्लाए, ''रहने दो अचल, अगले स्टेशन पर ले लेंगे।'' वह दौड़ा। गाड़ी रेंगने लगी थी। घबराहट में उसका हाथ डिब्बे के हैंडिल पर जमा नहीं, पैर फिसला और स्टेशन पर कुहराम मच गया।

उसके बाद क्या हुआ, अचल को याद नहीं। होश आया तो वह अस्पताल के बेड पर पड़ा था। सिरहाने माँ बैठी सिसक रही थीं। पिता जी गुमसुम खड़े थे। वह कुछ समझ नहीं पाया। फिर जब उसे पता चला कि वह एक पैर गवाँ चुका है, तो वह तड़प उठा था। सारा अस्पताल उसे चक्कर खाता–सा लगा था।

और फिर वह दिन भी आया जब अचल बैसाखियों के सहारे चलता नए स्कूल में प्रवेश लेने गया। पिता जी भी साथ थे। कितनी ही आँखें उस पर गड़ गई थीं। लड़के उसे इस तरह से देखने लगे थे जैसे वह कोई जानवर हो। गुस्से और मजबूरी से काँप उठा था वह। और अब कल उसे फिर स्कूल जाना था। फिर वही तीर जैसी फब्तियाँ, जहरीले ठहाके झेलने थे। उसे लग रहा था कि उसकी हिम्मत जवाब देती जा रही है। फिर क्या करे वह?

आखिर क्यों हँसते हैं लड़के उस पर? जरूर उन्हें कोई मज़ा मिलता होगा इससे। वह चिढ़ता है, रोता है तो वे समझते होंगे कि उन्होंने उसे दबा लिया, हरा दिया। लेकिन अगर वह चिढ़े नहीं, रोए नहीं तो? अगर वह उन्हें जता दे कि वह अपने लँगड़ेपन की कोई परवाह नहीं करता, तो उनका सारा मज़ा ही किरकिरा हो जाएगा– बल्कि क्यों न वह खुद ही अपने आप पर हँसे? अपने लँगड़ेपन पर हँसने का क्यों निमंत्रण दे उन्हें? तब वे समझ जाएँगे कि लँगड़ेपन की खिल्ली उड़ाकर उसे चिढ़ाने, सताने की कोशिश करना बेकार है; वह तो खुद ही अपनी टाँग को हँसने की चीज समझता है। उसके मुरझाए होंठों पर मुस्कान खिल उठी। फिर पता नहीं, वह कब सो गया।

वही कल वाला माहौल था। अचल अभी–अभी कक्षा के दरवाजे पर पहुँचा ही था कि कक्षा सीटियों, ठहाकों और डेस्कों की थपथपाहटों से गूँजने लगी थी, ''बा अदब! बा मुलाहिज़ा! होशियार! शहंशाह तैमूर लंग तशरीफ ला रहे हैं।'' वह मोटा, नाटा लड़का अपनी जगह पर खड़ा होकर चिल्लाया।

अचल ठिठका। कल वाली कायरता उसके अंदर सिर उठाने लगी थी। तुरंत उसने दाँत भींच लिए, फिर उसने अपने बिखरते साहस को सँजोया और मुस्कराने लगा और कक्षा के अंदर आ गया।

''अरे वाह, यह तो मुस्करा रहा है।'' एक हँसी भरी आवाज़ उभरी। ''क्यों बे! तुझे तैमूर लंग नाम पसंद आया क्या?'' मोटा लड़का बोला। कक्षा ठहाकों से गूँज उठी। अचल की हिम्मत फिर एक बार टूटने लगी। उसने बड़ी मुश्किल से अपना दिल मज़बूत किया, खुलकर मुस्कराया और बोला, ''बहुत।''

उसने देखा, कई लड़कों की आँखें आश्चर्य से फैल गई हैं। कक्षा का शोरगुल अचानक धीमा पड़ गया है। वह मोटा लड़का भी हक्का–बक्का रह गया था। वह खिसियानी–सी हँसी हँसकर बोला, ''दोस्तो! सुना? यह कहता है कि इसे 'तैमूर लंग' नाम पसंद है, बल्कि बहुत पसंद है। क्यों न इसे हम––।''

अचल ने उसे बात पूरी करने का मौका ही नहीं दिया। बैसाखियाँ टेकता हुआ उसके पास पहुँचा और मुस्कराकर बोला; ''नाम में आखिर रखा ही क्या है ज़नाब! तैमूर लंग कहो या अचल, रहूँगा तो वही जो हूँ। है ना?''

सारी कक्षा सन्न रह गई। अचल का उत्साह दो गुना हो गया। वह कहता रहा, ''अब देखो न, मेरा नाम है अचल। नाम के अनुसार तो मुझे अडिग, अचल रहना चाहिए। पर जरा ये बैसाखियाँ हटा दो, फिर देखो तुरंत 'सचल' न हो जाऊँ तो कहना।'' कहते–कहते वह खिलखिलाकर हँस पड़ा।

उसके कहने का अंदाज़ ऐसा था कि कई लड़के हँस पड़े। मोटा लड़का भी हँस पड़ा, पर अब किसी की हँसी में वह पहले वाला तीखापन नहीं रह गया था।

तभी घंटी बज उठी। वह अपनी सीट की तरफ बढ़ गया। बगल में बैठे लड़के ने हैरत से उसे देखा और वह पूछ बैठा, ''क्यों अचल, तुम्हें बुरा नहीं लगता कि हम लोग तुम्हें इतना चिढ़ाते हैं?''

अचल पहले तो चुप रहा, फिर एक गर्वीली मुस्कान के साथ बोला,''मैंने अपने ऊपर से गुजरती हुई ट्रेन को सहा है दोस्त! ये हल्के–फुल्के मज़ाक और फब्तियाँ भला क्या बिगाड़ पाएँगी मेरा।'' और अब उसे लग रहा था कि उसके पैर हाड़–मांस के नहीं, लकड़ी के नहीं, साहस के हैं और साहस के कभी न थकने वाले पाँवों के सहारे वह जीवन की बीहड़ राहों पर बढ़ता चला जा रहा है।

शब्दार्थः– **अडिग**–अटल, **शहंशाह**–सुल्तान, बादशाह, **हैरत**–विस्मय, आश्चर्य, **कोहराम**–हाहाकार, हंगामा, **बीहड़**–ऊँचा–नीचा, विषम, **हक्का बक्का**– आश्चर्य चकित हो जाना, **फब्तियाँ**– हँसी उड़ाना, ताने।

अभ्यास

पाठ से

1. अचल कौन था और वह किस प्रकार शारीरिक चुनौती का शिकार हो गया ?
2. अचल को ऐसा क्यों लगा कि किसी ने उसके दिल को मुट्ठी में दबोचकर मसल दिया हो ?
3. अचल को रात में नींद क्यों नहीं आई?
4. अचल ने कक्षा के साथियों द्वारा उसकी हँसी उड़ाने की प्रवृति का विरोध कैसे किया?
5. 'साहस के पैर' शीर्षक कहानी के माध्यम से कहानीकार पाठकों से क्या कहना चाहता है ?
6. कहानी का प्रधान चरित्र 'अचल' का व्यक्तित्व अपनी चुनौतियों के साथ हमें बेहद प्रभावित करता है। क्यों ?
7. किसने, किससे कहा?
   - क. ''बैठो बेटे! बैठे रहो। यह सब कैसे हो गया?''
   - ख. ''दोस्तो! भूगोल के मास्टर जी आते हैं तो अपने साथ नक्शा लाते हैं।''
   - ग. ''रहने दो अचल! अगले स्टेशन पर ले लेंगे।''
   - घ. ''बा अदब! बा मुलाहिज़ा! होशियार! शहंशाह तैमूर लंग तशरीफ ला रहे हैं।''
   - ङ ''क्यों बे, तुझे तैमूर लंग नाम पसंद आया क्या?''

पाठ से आगे

1. प्रायः देखा जाता है कि अक्सर समाज में लोग एक दूसरे की कद–काठी, रूप–रंग, चाल–ढाल आदि पर व्यंग्य अथवा उपहास करते हैं। क्या आपको इस तरह का व्यवहार उचित लगता है? समूह में चर्चा कर इसका उत्तर लिखिए।
2. समावेशी शिक्षा के अंतर्गत विद्यालय में दिव्यांग बच्चे भी सामान्य बच्चों के साथ अध्ययन करते हैं उनकी समस्याओं को ध्यान में रखते हुए आप विद्यालय में किस प्रकार के भौतिक बदलाव और संसाधन की व्यवस्था करना चाहेंगे? कक्षा में साथियों और शिक्षक से चर्चा कर एक सूची तैयार कीजिए।
3. "चलती ट्रेन में चढ़ना–उतरना दुर्घटना को आमंत्रण देना है।" इस कथन पर समूह में चर्चा कीजिए एवं इससे बचने के लिए क्या–क्या सावधानियाँ अपेक्षित हैं ? लिखिए।
4. प्रायः रेलवे स्टेशन और बस अड्डों पर चेतावनी वाले स्लोगन 'दुर्घटना से देर भली' 'सावधानी हटी दुर्घटना घटी', 'सतर्क चलें सुरक्षित चलें' लिखा रहता है इन पर समूह में चर्चा कीजिए और ऐसे ही स्लोगन बनाने का प्रयास कीजिए जो लोगों का ध्यान आकर्षित करते हैं।

भाषा से

8UIGF1

1. पाठ में **तीखापन** एवं **घबराहट** शब्द आया है जो कि भाववाचक संज्ञा है। यह शब्द तीखा विशेषण में 'पन' प्रत्यय लगाने से बना है अर्थात तीखा होने का भाव। उसी तरह से घबराना क्रिया में 'आहट' प्रत्यय के योग से बना है घबराहट अर्थात घबराने का भाव इसी प्रकार इन दोनो प्रत्यय का प्रयोग करते हुए दस–दस नए शब्द बनाइए।
2. जहरीले ठहाके एवं गर्वीली मुस्कान जैसे शब्द पाठ में आए हैं, इन शब्दों में 'जहरीले' और 'गर्वीली' शब्द अपने बाद आनेवाले (ठहाके, मुस्कान) शब्द की विशेषता बता रहे हैं। अतः ये पद विशेषण हुए और जिनकी विशेषता बताई जा रही है वे विशेष्य कहे जाते हैं। आप भी विशेषण और विशेष्य के पाँच उदाहरण ढूँढ़ कर लिखिए।
3. प्रस्तुत पाठ में 'चल' धातु में 'अ' उपसर्ग लगाकर 'अचल' शब्द का प्रयोग हुआ है। जिसमें 'अ' का अर्थ नहीं या मनाही के भाव है जैसे अचल का अर्थ जो चल नहीं सकता, स्थिर, ठहरा हुआ। 'अ' उपसर्ग युक्त शब्दों जैसे (अप्रिय, अप्राप्य, अहित, अघोष, अनाथ, अरुचि, अलभ्य, असहय) आदि के विलोम शब्द लिखिए।
4. प्रस्तुत पाठ में 'घंटाघर' शब्द का प्रयोग हुआ है। यह शब्द 'घंटा' और 'घर' दो शब्दों के मिलने से बना है। इसका अर्थ है 'घंटा का घर'। 'का' विभक्ति हटाकर यह शब्द बना है। विभक्ति चिह्न हटाकर जो सामासिक शब्द बनाए जाते हैं, वे तत्पुरुष समास कहलाते हैं। अब आप निम्नलिखित सामासिक शब्दों का विग्रह कर समास का नाम लिखिए–
   रसोईघर, राजपुत्र, राजभवन, देशसेवा, राजदरबार, विद्यासागर।
5. नीचे कुछ शब्द और उनके पर्यायवाची शब्द दिए गए हैं। इनकी सही जोड़ियाँ मिलाकर लिखिए।
   मोटा, नाटा, गरीब, बादशाह, ठिगना, स्थूल, नक्शा, पग, शहंशाह, फिक्र, मानचित्र, पैर, अचल, साहस, अडिग, हिम्मत, चिंता, निर्धन।
6. इस कहानी को संक्षेप में अपने शब्दों में लिखिए।

योग्यता विस्तार

96HPVK

1. उन दिव्यांग लोगों के बारे में जानकारियाँ एकत्र कर लिखिए जिनकी शारीरिक कमियाँ उनके सफलता के मार्ग में अवरोधक नहीं बन सकीं वरन् वे अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति और आत्मबल से कामयाबी हासिल करने में सफल रहे।
2. अपने शिक्षक और साथियों के सहयोग से इस विषय पर वार्ता आयोजन कीजिए कि हमारा दिव्यांगजनों के साथ व्यवहार कैसा होना चाहिये? समानानुभूतिपूर्ण अथवा सहानुभूतिपूर्ण और क्यों?
3. पैरा ओलम्पिक खेल किसे कहते हैं और वे क्यों महत्वपूर्ण हैं? भारत की उपलब्धि इस खेल में विश्व स्तर पर किस प्रकार की है इसका पता अपने साथियों और अभिभावकों से चर्चा कर कीजिए।